

प्रचलित मार्ग या रास्ता 7. युद्धारंभ, युद्ध-छिड़ना 8. प्राचीन भारत में नगर के मुख्य द्वार के बाहर बना स्थान जहां फाटक बंद होने के बाद आये यात्री रात के समय ठहरा करते थे।

**संसर्ग** पुं. (तत्.) 1. संपर्क, संबंध, संगत, मेल मिलाप 2. साथ रहने से उत्पन्न संबंध या लगाव 3. व्यावहारिक घनिष्ठता, मेल जोल 4. सहवास, साथ रहने का भाव या क्रिया 5. मैथुन, संभोग 6. ऐसी संपत्ति जिस पर परिवार के सभी लोगों का समान अधिकार हो 7. आयुर्विज्ञान में वात, पित्त और कफ में से दो का एक साथ होने वाला प्रकोप या विकार 8. वह बिंदु जहाँ पर रेखाएँ एक दूसरे को काटती हैं।

**संसर्गज** वि. (तत्.) संसर्ग या साथ या संपर्क में आने से होने वाला, (गुण-दोष, रोग आदि) छुतहा रोग, संक्रामक रोग संपर्क, हवा, पानी से भी फैलता है परंतु संसर्गज या छुतहा रोग केवल रोगी के संसर्ग में रहने या उसे छूने मात्र से उत्पन्न हो जाता है।

**संसर्ग दोष** पुं. (तत्.) वह दोष या बुराई जो किसी के संसर्ग से उत्पन्न हो जैसे- शराब पीना, जुआ खेलना यह दोष ऐसे लोगों के संसर्ग में रहने से उत्पन्न हो जाते हैं।

**संसर्ग रोध** पुं. (तत्.) 1. संगरोधन, संक्रामक रोगों के बचाव के लिए बाहर से आने वाले लोगों को कुछ समय तक कहीं अलग रख दिया जाता है ताकि उनमें वह बीमारी न फैले 2. उक्त कार्य के लिए अलग या निर्धारित किया गया स्थान, निरोध।

**संसर्गविद्या** स्त्री. (तत्.) लोगों से मेल जोल पैदा करने की कला, व्यवहारकुशलता, सामाजिकता।

**संसर्गाभाव** पुं. (तत्.) 1. संसर्ग का अभाव, संसर्ग न होना, संबंध न होना 2. न्याय शास्त्र में अभाव का वह प्रकार या भेद जो संसर्ग न रहने की स्थिति में माना जाता है, एक वस्तु से दूसरी वस्तु के संबंध का निषेध जैसे- भूमि पर

घड़ा नहीं है, का अर्थ भूमि से घड़े के संसर्ग का अभाव है।

**संसर्जन** पुं. (तत्.) 1. संयोग या मिलन होना 2. जुड़ना या सटना 3. अपनी ओर मिलाना 4. त्याग करना, छोड़ना, उत्सर्जन।

**संसर्प** पुं. (तत्.) 1. रेंगना, खिसकना, सरकना, धीरे-धीरे आगे गढ़ना 2. ज्योतिष में चन्द्र गणनानुसार वह अधिक समय जो किसी क्षय मास वाले वर्ष में पड़ता है, अर्थात् जिस वर्ष में क्षय मास हो उसी वर्ष में अधिमास भी पड़ता है क्षयमास केवल कार्तिक मार्गशीर्ष एवं पौष में पड़ता है, उसी वर्ष फाल्गुन से कार्तिक के बीच किसी भी मास में अधिक मास होता है।

**संसर्पण** पुं. (तत्.) 1. धीरे धीरे आगे चलना या बढ़ना 2. खिसकना या रेंगना 3. धीरे धीरे ऊपर चढ़ना या बढ़ना जैसे बेल या लतायें बढ़ती हैं 4. सहसा आक्रमण करना।

**संसर्पिल** पुं. (तत्.) 1. संसर्पण करने वाले, रेंगने वाले, सरकने वाले जैसे- सांप, लता, बेल आदि 2. मीनार, लाट, शिखर।

**संसर्पी** वि. (तत्.) 1. संसर्पिल, संसर्पण करने वाला, धीरे-धीरे सरकाने, रेंगने वाला 2. वैद्यक में पानी पर तैरने या उतरने वाला।

**संसादन** पुं. (तत्.) 1. एकत्र करना, जुटाना, जमा करना 2. क्रम से या सिलसिलेवार रखना या लगाना।

**संसाधन** वि. (तत्.) 1. कोई भी काम अच्छी तरह पूरा करना 2. काम की तैयारी, आयोजन 3. जीतकर या दबा कर वश में करना, दमन करना 4. उपयोगी साधन जुटाना 5. भरण-पोषण, रक्षा, विकास आदि की सामग्री 6. साधन सामग्री 7. खाद्य वस्तुओं का प्रसंस्करण।

**संसाधनीय** वि. (तत्.) 1. संसाध्य/संसाधन के योग्य, काम जो पूरा किया जा सकता हो 2. दमनीय, दबाने के योग्य, जीतने योग्य 3. करणीय, जिसे किया जा सके।